पत्ताखोर उपन्यास में नशे के समाजशास्त्र का यथार्थ चित्रण

डॉ. बाळासाहेब पगारे

बी.एन.एन महाविद्यालय, भिवंडी

'पत्ताखोर' मधु कांकरियाजी का नशे के काले बाजार को उजागर करनेवाला एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। आज के उत्तर आधुनिकता ने चकाचौध जीवन के साथ तनाव, कुंठा जैसी समस्याओं प्रदान की है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में विकास और प्रगति के साथ–साथ अनेक व्याधियाँ भी उपजी हुई है। युवाओं में नशे और ड्रग्स की लत बढती जा रही हैं। जिससे युवा वर्ग अपने लक्ष्य से भटक रहा है। पंजाब जैसा देश का संपन्न राज्य नशे के गर्त में फँसने से वहाँ की युवा पीढि बर्बादी की कगार पर है। बाजार की चकाचौध मध्य और निम्न मध्यवर्ग को प्रभावित कर रहा है। जिसका परिणाम भटकाव और विकृति है। नशे के लिए जिम्मेदार खुद व्यक्ति, परिवेश, नशे के व्यापारी, घर का माहौल तथा सामाजिक, आर्थिक स्थिति कौन जिम्मेदार है, इस बारे में निश्चित कहना कठिण है। लेखिकाने इस उपन्यास में इन्ही समस्याओं के कारणों को तलाशकर उन्हें उजागर करने की कोशिश की है।

उपन्यास का केंद्रिय पात्र तेरह वर्ष का आदित्य है। समूची कहानी उसके इर्द–गिर्द घुमती है। हेमंत बाबू और वनश्री उसके माता–पिता है। माता–पिता दोनों नौकरीपेशा है, अतः आदित्य स्कूल के अलावा अकेला घर में रहता है। बडा घर उसे खाने के लिए दौडता है। आज महानगरों में यह हर घर की समस्या बन गयी है कि माता–पिता दोनों नौकरीपेशा होने के कारण घर में बच्चों को अकेला रहना पडता है। यह तनहाई उन बच्चों में कुंठा और उदासी निर्माण कर रही है। जिससे मुक्ति पाने के लिए बच्चे आज गलत रास्ते की ओर आकर्षित होते नजर आ रहे है। आदित्य के माता–पिता में अक्सर नोंक–झोक होती रहती है इसलिए एक घर में तीन लोग रहते हुए भी एक साथ नहीं होते है। इस बारे में लेखिका लिखती है, ''एक ही घर में रहते हुए भी तीन जिंदगियाँ अपने–अपने द्विप में बहती विचरती रही, बिना किसी को छुते हुए।'' इस बीच आदित्य की आत्मकथा के कुछ पृष्ठ हेमंत बाबू को मिलते हैं, जिससे आदित्य की तनहाई और उदासी का पता चलता है। साढे चार वर्ष तक उसकी दादी घर में रहती थी। तब वह सुरक्षित था। माँ गरम स्वभाव की होने से, जिसे पिता भी डरते हैं। माँ पिता को डाँटते देखकर आदित्य के मन में पिता के प्रति सहानुभूति और माँ के प्रति कठोर भाव निर्माण होते है। आदित्य घर में अकेला रहने से कुंठा, उदासी का शिकार होता है। नौकरीनेशा होने से वनश्री जीवन में स्वंछदता को आबादित रखना चाहती है। उसका मानना है कि आदित्य के उम्र के लडके विदेश में अकेले पढ़ने जाते हैं। इसे तो घर में सिर्फ अकेले रहना है। वह बेटे के अकेलेपन और तनहाई को नजरअंदाज करती है। हेमंत बाबू वनश्री को बेटे को समझने की सलाह देते हुए है कि,'' तुम उसके वर्तमान को नकारकर भूल कर रही हो। वर्तमान सबसे बडा सत्य होता है। उसकी उपेक्षाकर भविष्य को सवाँरा नहीं जा सकता है।'' कम सुविधा के साथ जिया जा सकता है, अपितु माँ के बिना भौतिक साधनों की कोई आवश्यकता नहीं है।

आदित्य अकेलेपन से तंग आकर होमवर्क नहीं कर पाता है, परिणाम स्वरुप उसे स्कूल में पनिश किया जाता है। वह हर दिन घर की सब्जी–भाजी से उब जाता है। कभी–कभार वह बाहर मिठाई को ताकता रहता है। अतः वह एक दिन जैन मंदीर से पैसा चुराकर जिलेबी खाने की पोल एक मित्र के द्वारा खुल जाती है। लेखिका यहाँ स्पष्ट करती है कि

जिस माता–पिता का बच्चों की ओर ध्यान होता है, उनके बच्चे गलत रास्ते की ओर जाने की संभावना कम होती है। आदित्य पढ़ाई से जादा संगीत में रुची रखता है। वह समूची दुनिया के लिए प्यार भरे नगमे बनाकर उँची उडान भरना चाहता है। बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करनेवाला आदित्य तनावों से मुक्ति पाने हेतु एक दिन घुमले–घुमते ऐसे जगह पहुँता है, जहाँ गांजा, अफिम और ताडी जैसी नशे की चिजों को असानी से सेवन की जाती है। उसके सहपाठी का भाई अभिज्ञान उसे वहाँ मिलता है। वह उसे गांजे का पहला सट्टा मारने के लिए उकसाता है। उसके कहनेपर आदित्य नशे का सट्टा मारता है और नशे की खतरनाक दुनिया में उसका प्रवेश हो जाता है। पहिली बार नशे का अनुभव से आदित्य एक अलग दुनिया में विहार करता है। यह अनुभव उसके लिए नया था। बारहवी की टेस्ट में उसे रोक दिया जाता है। प्रिंसिपल माता–पिता के आश्वासन के बिना बोर्ड की परीक्षा में बैठने नहीं देते है। हेमंत बाबू आदित्य को समझाते है कि पदवी के बाद संगीत और करियर दोनो किया जा सकता है। आदित्य का नशे की ओर बढना पिता को चौंकाता है। बोर्ड की परीक्षा न दे पाने से निराश आदित्य घर छोडकर पुरी के एक होटल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करता है। वहाँ भी एक युवक के साथ हेराइन का नशा करते हुए पकडा जाने पर वह नौकरी भी छुट जाती है। पिता के साथ घर वापस लौटते समय घर की सुरक्षा और कमरे की उब महसुस करता है। वह अपने किये पर शर्मिदा होकर स्वंय को पिता के प्यार के काबिल नहीं समझता है।

पुरी से लौटने पर आदित्य कॉलेज में प्रवेश लेता है। वनश्री बेटे के भविष्य के लिए नौकरी छोडती है। पति के कमाई पर घर चलाती है। कुछ ही दिनों में वह अपने फैसले पर पछताती है। वह अपनी खीज आदित्य पर उतारती है। घर के बिगडते वातावरण से ढाई साल तक अच्छा व्यवहार करनेवाला आदित्य फिर एक बार गलत संगति में पहुँचता है। निराशा और बोझिल जिंदगी से दो हाथ करने के लिए देवांशु के साथ ढाई साल बाद हेराइन का नशा करता है। अब वह नशे के लिए घर से पैसे और सामान के साथ–साथ गणेशजी की मूर्ति भी चुराता है। वह शिव से शव बनता जा रहा था। नशे से उसकी हालत खराब होकर विड्रायल की स्थिति में पहुँचती है। हेमंत बाबू उसे अठ्ठाइस दिन नर्सिग होम में इलाज करके अंतराग्राम रिहेबिलिटेशन में भरती करते है। वहाँ उन्हें अले–अले मरीजों को मिलने का मौका मिलता है। लेखिकाने बारह वर्ष का चिकु जो अपने मामा के लडके के बदतमीजी का शिकार हुआ था, जिससे उसका भितरी सौंदर्य खत्म हुआ था। शोधकर्ता विवके सक्सेना के साथ उसके गुरु ने उसके शोधपत्र धोके से अपने नाम छपवाये थे। वह सदमा बर्दाश्त न कर पाने की वजह से वह ब्राऊन शुगर का शिकार हुआ था। प्रो. शास्त्री लंदन में प्रतिकुल परिसिथतियों में मजदूरी कर पौंड जमर करके परिवार को खुशिहाल देखने का सपना देखा था। परंतु घर आते ही पत्नी को अपने दोसत के साथ बिस्तर पर देखता है, फिर भी वह नशे के पास नहीं जाता है। पत्नी के साथ गये बेटे को शे का धंदा के सिलसिले में तिहार जेल में सजा काटते हुए देखता है। तब से वह राह भटके युवकों को इन्साप बनाने का नेक काम कर रहे है। प्रो. शास्त्री के व्यवहार से स्पष्ट होता है, कि किसी भी समस्या का समाधान नशे से निकलता नहीं है।

आदित्य इलाज के बाद घर आते ही पिता उसे सिन्थेसाइजर भेट देता है, जिससे उसके जीवन में खुशियों की शरुआत होती है। वह संगीत का एक अहम हिससा बन जाता है। कॉलेज के एक कार्यक्रम में नृत्यांगना राशि के नुत्य से वह अत्याधिक प्रभावित होता है। दोनों में नजदिकिया बढ जाती है। एक दुसरे के प्यार में दोनों खो जाते हैं। दोनों जीवन साथी बनने का फैसला करते है। राशि की माँ कैन्सर से पीडित है। वह आदित्य को माँ से मिलाका उसे मायुस करना नहीं चाहती है। अतः वह कुछ महिनों तक उनकी मुलाकात नहीं हो पाती है। आदित्य राशि को मिलने के लिए उसके घर

पहुँचता है। उसके घर में शादी का कार्ड देखना और राशि का न मिलने का अर्थ यह लगाता है कि वह कार्ड राशि के शादी का ही है। यहाँ वह गलतफहमी का शिकार होता है और यह सदमा बर्दाश्त न कर पाने की वजह से एक बार फिर वह शराब और ड्रग्ज का सहारा लेता है। उसकी मुलाकात नशे का धंदा करनेवाले विश्वजीत से होती है और उसी के घर में रहता है। वह मायुस और निराश होकर उसका घर छोडता है। वह आत्महत्या करना चाहता है परंतु एक औरत की अपने जर्जर पति की अंतिम इच्छा पुरी करने भरसक कोशिश को देखकर आदित्य का मन परिवर्तित होता है। जिंदगी इतनी सस्ती नहीं है, जिसे असानी से खत्म किया जा सके। वह एक रात कलकत्ता की फुटपाथ पर बिताकर जान जाता है, कि संसार में कितने ऐसे लोग है, जिन्हें जिने के लिए संघर्ष करना पडता है। वहाँ के लागों की दुखी और बेबस जिंदगी देखकर वह फैसला करता है कि उनकी जिंदगी सवाँर ने के लिए वह जरुर प्रयास करेगा।

आदित्य के जीवन में एक नया मोड आता है। वह मोहन बाग के लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी सवाँरने के लिए काम शुरु करता है। वहाँ के रिक्षावाले, हाथगाडीवाले, मजदूर, फेरिवाले, सब्जी बेचनेवाले, रद्दीवाले आदि की युनियन बनाता है। उन्हें मेहनत के लिए प्रेरित करता है। वह एक नये समाज का निर्माण करना चाहता है, जिसमें कोई अभावग्रस्त न हो। कोई छोटा–बडा न होकर सभी समान हो। आदित्य का नेत्त्व धीरे–धीरे उभरता है। उसके नेक कार्य से प्रभावित होकर बहुत सारे उसकी मदद के लिए आगे आते है। उसमें पुष्पादेवी सबसे आगे है। वह साढे तीन लाख का डोनेशन देती है। आदित्य ने अपने क्रियाशिलता से माहनबाग के लोगों में जान फुक दी है, जिससे वहाँ के लोग एक स्वाभिमानभरी जिंदगी जी रहे है। लगभग पांच साल बाद हेमुत बाबू और वनश्री आदित्य को ढूढँते हुए मोहनबाग आते है। अपना बेटा झोपडियों में रहकर यहाँ के पीडित लोगों की उन्नति के लिए काम करते देखकर खुश हो जाते है। दोनों भी उसे घर चलने का आग्रह करते है, परंतु आदित्य अपना काम अधुरा छोडकर जाने से इन्कार करता है। राशि का इंतजार भी उसे अपने कार्य से विचलित नहीं कर पाता है। वह मानव मुक्ति का नेक कार्य करते देखकर हेमुत बाबू उसे ले जाने का आग्रह छोडते हुए उसके हाथें अधिक से अधिक अच्छा कार्य होने की कामना करते है। मधु कांकरियाजी ने उपन्यास में आधुनिकता की चकाचौंध से प्रभाव से नशे से चंगुल फँसती युवा पीढि के भयावह सच्चाई से परिचित कराते हुए स्पष्ट किया है कि नशे के लिए कोई और जिम्मेदार नहीं होता है, बल्कि अपना मन उसके लिए जिम्मेदार होता है। प्रतिकुल परिस्थितियों में व्यक्ति अपना विवके खोकर गलत राह पर चला जाता है, जिससे जीवन बर्बाद होता है। लेखिकाने माता–पिता की भूमिका पर भी सवाल खडा करते हुए स्पष्ट किया है कि सिर्फ बैंक बैलेन्स और भौतिक सुविधाएँ बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए पर्याप्त नहीं है, अपितु उसके लिए समय देना, उसके साथ घुल–मिल जाना, उसकी संगति के प्रति ध्यान देना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। साथ में यह संदेश भी दिया है कि जीवन में अनेक अच्छे–बुरे प्रसंगों का सामना करना पडता है। प्रतिकुल परिस्थिति में भी अपना विवके बनाए रखने पर राह भटकने का खतरा नहीं होता है। इस प्रकार लेखिकाने इस उपन्यास के माध्यम से आज के बढते हुए नशे की समस्या को उजागर किया है और उससे सवरने की सलाह भी दी है।

संदर्भः

1. पत्ताखोर– मधु कांकरिया
2. कथाकार मधुं कांकरिया– सुनिता कावले